इकाई 28 उद्योगों की अवस्थिति

इकाई की रूपरेखा

28.0 उद्देश्य
28.1 प्रस्तावना
28.2 अवस्थिति का सिद्धान्त
28.3 वेबर का निगमनात्मक सिद्धान्त
  28.3.1 अवस्थिति को प्रभावित करने वाले कारण
  28.3.2 वेबर सिद्धान्त की मान्यताएँ
  28.3.3 आलोचनात्मक मूल्यांकन
28.4 सार्जेण्ट फ्लोरेन्स का आगमनात्मक विश्लेषण
  28.4.1 अवस्थिति कारक
  28.4.2 अवस्थिति का गुणांक
  28.4.3 आलोचनात्मक मूल्यांकन
28.5 अवस्थिति के अन्य सिद्धान्त
28.6 अवस्थिति को प्रभावित करने वाले कारक
  28.6.1 ऐतिहासिक कारक
  28.6.2 कच्चे माल की उपलब्धता
  28.6.3 बाज़ार की अभिगम्यता
  28.6.4 परिवहन सम्पर्क
  28.6.5 विद्युत संसाधन
  28.6.6 श्रम संबंध
  28.6.7 आधारभूत संरचना सेवाएं
  28.6.8 वित्तीय सेवाएँ
  28.6.9 प्राकृतिक और जलवायु संबंधी विचार
  28.6.10 व्यक्तिगत कारक
  28.6.11 रणनीतिक कारण
28.7 औद्योगिक अवस्थिति की गत्यात्मकता
  28.7.1 मौसम संबंधी परिवर्तन
  28.7.2 चक्रीय परिवर्तन
  28.7.3 धर्म निरपेक्ष परिवर्तन
  28.7.4 संरचनात्मक परिवर्तन
28.8 सारांश
28.9 शब्दावली
28.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें एवं संदर्भ
28.11 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

28.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- औद्योगिक अवस्थिति की अवधारणा का अभिप्राय और महत्त्व समझ सकेंगे;
- उद्योगों की अवस्थिति के संबंध में विभिन्न दृष्टिकोणों का विश्लेषण तथा उनके बीच भेद कर सकेंगे;

- यह समझ सकेंगे कि किसी विशेष उद्योग का स्थान विशेष पर केन्द्रीकरण का कारण क्या है;
- उन कारकों की व्याख्या कर सकेंगे जो अवस्थिति के चयन में उद्यमी को प्रभावित करती हैं; और
- अवस्थिति की गत्यात्मकता की व्याख्या कर सकेंगे।

28.1 प्रस्तावना

ऐसा प्रतीत होता है कि मानव की ही भाँति उद्योगों की भी विशेष क्षेत्रों और स्थानों पर केन्द्रित होने की प्रवृत्ति है। यह मात्र संयोग नहीं है कि भारत में अधिकांश बड़े उद्योग बड़े शहरों, यातायात केन्द्रों और खानों तथा खनिजों से भरपूर क्षेत्रों में अथवा उसके समीप अवस्थित हैं। वस्त्र उद्योग जिसका संगठित क्षेत्र में सबसे पहले विकास हुआ, 1920 तक मुख्य रूप से मुम्बई क्षेत्र में अवस्थित था। समुद्र, रेल और सड़क मार्ग से सुचारू रूप से जुड़े होने, निकटवर्ती क्षेत्रों में कपास का उत्पादन होने, सस्ता और कुशल श्रमिकों की बहुतायत, बैंकिंग और साख सुविधाएँ, तकनीकी और व्यावसायिक सेवाएँ, आर्द्र जलवायु, विशाल बाज़ार और वित्तीय संसाधनों तथा अनुभव से संपन्न उद्यमी व्यावसायिक वर्गों की उपलब्धता के कारण मुम्बई ने संगठित क्षेत्र में वस्त्र और अन्य अनेक उद्योगों को अपनी ओर आकृष्ट किया। कोलकाता और चेन्नई को भी अवस्थिति संबंधी लाभ प्राप्त था और इसलिए इन स्थानों का औद्योगिकरण पहले हुआ। औद्योगिकरण के आरम्भिक चरणों में उत्तर प्रदेश और बिहार में चीनी उद्योग का केन्द्रीकरण गन्ना उत्पादन में इन राज्यों की विशिष्ट स्थिति के कारण हुआ था। बिहार और बंगाल में लौह और इस्पात मिलों की स्थापना इसलिए हुई कि इन राज्यों में लौह अयस्क और कोयला का प्रचुर भण्डार था। डिग्बोई में 1890 में तेल का प्रथम कुआँ खोदे जाने के बाद असम में पेट्रोलियम उद्योग का आरम्भ हुआ। इस समय बंगलौर और हैदराबाद में सॉफ्टवेअर उद्योग के केन्द्रीकरण की प्रवृत्ति एक स्थापित प्रघटना है, जैसा कि देश के विभिन्न भागों से उद्योगों का पलायन और अन्य स्थानों पर उनकी पुनर्स्थापना से भी स्पष्ट है।

अर्थशास्त्रियों को सदैव ही इस प्रघटना की व्याख्या करने में कठिनाई महसूस हुई है। परिणामस्वरूप, कुछ ही समय पहले अनेक सिद्धान्तों, जिन्हें अवस्थिति का सिद्धान्त कहा जाता है, का विकास हुआ है।

28.2 अवस्थिति का सिद्धान्त

अर्थशास्त्रियों ने अवस्थिति का विशुद्ध सिद्धान्त विकसित करने का प्रयत्न किया है जिसमें औद्योगिक विकास के अवस्थिति स्वरूप को निर्धारित करने वाले आर्थिक कारकों (शक्तियों) को अन्तर्विष्ट किया जाए। इस प्रकार का सिद्धान्त कतिपय उद्योगों के स्थान विशेष पर अवस्थित होने के ढंग और दो प्रकार की गत्यात्मक शक्तियों नामत: (i) उद्योग का विकास और (ii) परिवेश में परिवर्तन के अंतर्गत उनके व्यवहार का विश्लेषण करने में सहायक होगा।

इस विषय ने अपनी ओर क्लासिकल अर्थशास्त्रियों का ध्यान भी आकृष्ट किया था, हालाँकि उन्होंने इस विषय का संक्षिप्त उल्लेख ही किया है।

ऐडम स्मिथ 'श्रम विभाजन' की अवधारणा में अधिक रुचि रखते थे। श्रम विभाजन की अवधारणा पर चर्चा करते समय उन्होंने 'भौगोलिक श्रम विभाजन' का उल्लेख किया।

जे.एस. मिल और अल्फ्रेड मार्शल ने भी उद्योग की अवस्थिति को प्रभावित करने वाले कुछ कारकों का संक्षेप में उल्लेख किया है। तथापि, उन्होंने औद्योगिक अवस्थिति का एकीकृत और समन्वित सिद्धान्त प्रतिपादित करने का कोई प्रयास नहीं किया। अल्फ्रेड मार्शल ने इस तरह के सिद्धान्त के विकास का मार्ग तो बता दिया किंतु स्वयं वह इस दिशा में इससे आगे नहीं बढ़े। उन्होंने इस समस्या को वैज्ञानिक दृष्टि से देखने की अपेक्षा इसका अनुभव सिद्ध विश्लेषण अधिक किया था।

उसके बाद से, अर्थशास्त्रियों ने औद्योगिक अवस्थिति के विभिन्न व्यापक और एकीकृत सिद्धान्त प्रतिपादित किए हैं। इन सिद्धान्तों को सुविधा की दृष्टि से तीन भागों में बाँटा जा सकता है :

क) वेबर का निगमनात्मक सिद्धान्त

ख) सार्जेण्ट फ्लोरेन्स का आगमनात्मक विश्लेषण

ग) अवस्थिति के अन्य सिद्धान्त

28.3 वेबर का निगमनात्मक सिद्धान्त

अवस्थिति का पहला वैज्ञानिक और व्यापक सिद्धान्त विकसित करने का श्रेय जर्मन अर्थशास्त्री अल्फ्रेड वेबर को जाता है। उनकी मूल कृति वर्ष 1909 में जर्मन भाषा में प्रकाशित हुई थी। इसका अनुवाद अंग्रेजी में 1929 में हुआ। तब से यह सिद्धान्त अवस्थिति संबंधी चर्चाओं के केन्द्र में रहा है।

वेबर ने विश्लेषण की निगमनात्मक पद्धति अपनाई। उन्होंने उन सामान्य कारकों का विश्लेषण किया जो एक उद्योग को विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों की ओर खींचते हैं और जो अंतत: औद्योगिक अभिविन्यास के मौलिक ढाँचा को निर्धारित करते हैं।

28.3.1 अवस्थिति को प्रभावित करने वाले कारण

वेबर ने अवस्थिति को प्रभावित करने वाले कारणों को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया है:

क) उद्योगों के प्रादेशिक वितरण के प्रादेशिक कारक, अथवा प्राथमिक कारण

ख) उद्योगों के पुनर्वितरण के लिए उत्तरदायी संचयी और विसंचयी कारक अथवा गौण कारण

क) **प्रादेशिक कारक**

वेबर ने उद्योग की अवस्थिति को प्रभावित करने वाले प्रादेशिक कारकों को चिन्हित करने के प्रयास में, विभिन्न उद्योगों की लागत संरचना का अध्ययन किया। वेबर ने दो प्रादेशिक कारकों की पहचान की:

i) परिवहन लागत

ii) श्रम लागत

ये दो प्रादेशिक कारक औद्योगिक अभिविन्यास के लिए बुनियादी ढाँचा का सृजन करते हैं :

i) परिवहन लागतें दो बातों से निर्धारित होती हैं

   क) परिवहन की जाने वाली सामग्री का भार

   ख) तय की जाने वाली दूरी

पहले प्रत्येक उद्योग की स्थापना उन स्थानों पर होगी जो कच्चे माल के स्रोतों और बाज़ार दोनों के मामले में परिवहन की दृष्टि से सबसे अनुकूल होगा।

कच्चे माल का निम्नलिखित विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकरण किया जा सकता है :

कच्चा माल

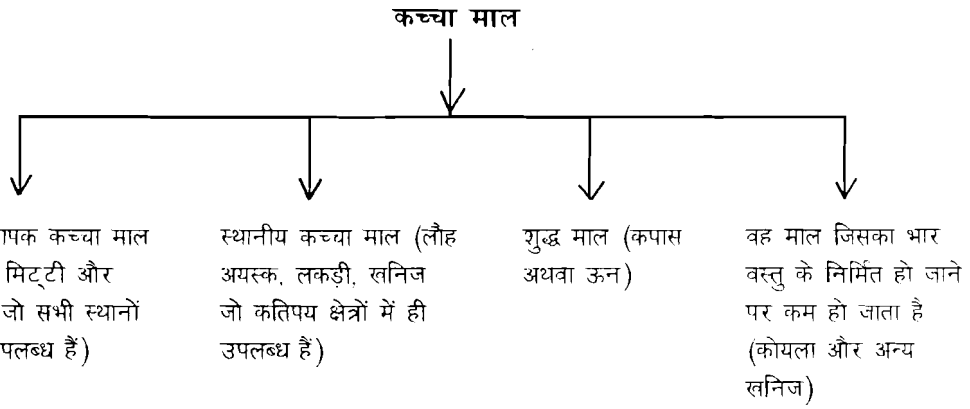

- सर्वव्यापक कच्चा माल (ईट, मिट्टी और पानी जो सभी स्थानों पर उपलब्ध हैं)
- स्थानीय कच्चा माल (लौह अयस्क, लकड़ी, खनिज जो कतिपय क्षेत्रों में ही उपलब्ध हैं)
- शुद्ध माल (कपास अथवा ऊन)
- वह माल जिसका भार वस्तु के निर्मित हो जाने पर कम हो जाता है (कोयला और अन्य खनिज)

किसी उद्योग की अवस्थिति को सर्वव्यापक कच्चे माल की अपेक्षा स्थानीय कच्चा माल अधिक प्रभावित करता है। इसी प्रकार किसी विशिष्ट स्थान के प्रति कोई उद्योग कहाँ तक आकर्षित होता है वह इस बात पर भी निर्भर करता है कि उत्पादन की प्रक्रिया में कच्चे माल का भार किस हद तक घटता है। उन सामग्रियों जिनका भार उत्पादन की प्रक्रिया में कम होता है, शुद्ध माल की अपेक्षा अधिक पसंद किए जाते हैं।

उपर्युक्त सरल निगमनों के आधार पर ही बेबर ने परिवहन अभिविन्यास का अपना नियम प्रतिपादित किया था। उनका विश्वास है कि तैयार वस्तु की तुलना में स्थानीय मालों के भार का अनुपात विनिर्माण उद्योगों की अवस्थिति पर निर्धारक प्रभाव डालता है। यदि यह अनुपात (जिसे वह 'भौतिक सूची' कहते हैं) अधिक है तो उद्योग की प्रवृत्ति कच्चे माल के भण्डार के समीप अवस्थित होने की रहेगी। यदि भौतिक सूची कम है तो उद्योग की प्रवृत्ति खपत के केन्द्र के समीप अवस्थित होने की रहेगी।

ii) वेबर ने श्रम लागतों को दूसरा महत्त्वपूर्ण प्रादेशिक कारण माना है

श्रम लागतें न्यूनतम परिवहन लागतों से विचलन को स्पष्ट करता है। जब श्रम लागतों में अंतर है, तो परिवहन अभिविन्यास के कारण उद्योग अनुकूलतम बिन्दु से विचलित हो सकता है। यह सिर्फ तभी संभव होगा जब नए केन्द्र पर अतिरिक्त परिवहन लागत की, श्रम लागतों में बचतों से कहीं अधिक प्रतिपूर्ति हो जाए। इस प्रकार, परिवहन लागतों के आधार पर प्राप्त संतुलन की स्थिति में सस्ते श्रम लागतों के प्रभाव के कारण परिवर्तन हो सकता है।

श्रम अवस्थिति को आकर्षित करने की शक्तियाँ दो कारकों पर निर्भर हैं :

क) श्रम लागत सूचकांक (उत्पाद के मूल्य की तुलना में श्रम लागत का अनुपात)

ख) स्थानीय परिमाण (उत्पादन की पूरी प्रक्रिया के दौरान परिवहन किए जाने हेतु भार)

[illegible] श्रम लागतों द्वारा विचलन की सीमा का निर्धारण स्थानीय परिमाण की तुलना में श्रम लागत के अनुपात द्वारा निर्धारित होता है जिसे 'श्रम गुणांक' कहा गया है। इसी विश्लेषण के आधार पर वेबर द्वारा श्रम अभिविन्यास का नियम तैयार किया गया है।

[illegible] लागतें अलग-अलग होती हैं तो एक उद्योग अपने श्रम गुणांक के आकार के अनुपात में [illegible] अवस्थितियों से विचलित होते हैं।

संक्षेप में, परिवहन लागतें और श्रम लागतें प्रादेशिक अथवा प्राथमिक कारक हैं जो एक उद्योग की अवस्थिति को स्पष्ट करते हैं। प्रत्येक उद्योग विशेष, अवस्थिति के संबंध में निर्णय लेने से पहले परिवहन लागत लाभों और श्रम लागत लाभों के बीच संतुलन स्थापित करना चाहता है।

ख) **संचयी और विसंचयी कारक**

ये उद्योगों की अवस्थिति का निर्धारण करने वाले गौण कारक हैं।

संचयी कारक एक ही स्थान पर उद्योग के केन्द्रीकरण के परिणामस्वरूप उत्पादन लागत में आने वाली मितव्ययिता से संबंधित है। दूसरे शब्दों में, संचयी कारक पैमाने की बाह्य मितव्ययिता से संबंधित है।

विसंचयी कारक उद्योग के विकेन्द्रीकरण के कारण उत्पादन लागत में कमी से संबंधित है। यह सामान्यतया केन्द्रीकरण के परिणामस्वरूप स्थानीय करों और भूमि के मूल्य में वृद्धि के कारण होता है।

संचयी और विसंचयी कारक विपरीत दिशाओं में काम करते हैं। जिन उद्योगों के कुल उत्पादन लागत में विनिर्माण व्ययों का अधिक अनुपात होता है, के केन्द्रीकरण की जबर्दस्त प्रवृत्ति होती है क्योंकि तब बाह्य मितव्ययिताएँ प्राप्त की जा सकती हैं।

एक उद्योग को किसी विशेष स्थान पर आकर्षित करने के लिए संचयी कारक की शक्तियाँ दो घटकों पर निर्भर करती है :

i) कुल उत्पादन मूल्य में विनिर्माण लागतों का अनुपात (विनिर्माण सूची); और

ii) विनिर्माण की पूरी प्रक्रिया के दौरान परिवहन की जाने वाली सामग्रियों का भार (स्थानीय परिणाम)

स्थानीय परिमाण में विनिर्माण लागतों के अनुपात को वेबर ने 'विनिर्माण गुणांक' (विनिर्माण-फल) कहा है।

यदि विनिर्माण गुणांक अधिक हो तो उद्योग एक ही स्थान पर इकट्ठे होने लगते हैं जबकि विनिर्माण गुणांक कम हो तो उद्योग भिन्न-भिन्न स्थानों पर स्थापित होने लगते हैं। इस प्रकार प्रत्येक संचयी प्रवृत्ति से विचलनकारी बल का सृजन होता है जो परिवहन नेटवर्क (संजाल) को विकृत कर देता है।

एक से अधिक स्थानों पर अवस्थिति

वेबर ने उस स्थिति में जब एक उद्योग में उत्पादन के विभिन्न चरण स्वतंत्र रूप से और अलग-अलग स्थानों पर पूरे किए जा सकते हैं तब एक उद्योग के एक से अधिक स्थानों पर अवस्थिति की संभावना पर भी विचार किया है।

उस स्थिति में जब उत्पादन के विभिन्न चरण अलग-अलग स्थानों पर पूरे किए जा सकते हैं तो उद्योग अलग-अलग स्थानों पर स्थापित होंगे।

अधिकांशतया उत्पादन का प्रथम चरण वह चरण है जिसमें बेकार सामग्रियों को नष्ट कर दिया जाता है। दूसरे चरण में शुद्ध माल को परिष्कृत किया जाता है।

उत्पादन के दूसरे चरण को पहले चरण से कोई आर्थिक लाभ प्राप्त नहीं होता है।

ऊपर वर्णित सापेक्षिक प्राथमिक और गौण कारकों पर विचार करते हुए उद्योग को दो अलग-अलग स्थानों पर स्थापित किया जाता है।

28.3.2 वेबर सिद्धान्त की मान्यताएँ

वेबर ने अपने सिद्धान्त का प्रतिपादन करते समय निम्नलिखित मान्यताएँ निर्धारित की थीं:

i) कच्चे माल की अवस्थिति यथा प्रदत्त मानी जाती है।

ii) उपभोग के विशेष वितरण की व्यवस्था जैसी दी गई है की जाती है।

iii) श्रम को यथा प्रदत्त वितरण माना जाता है।

iv) एक समान परिवहन व्यवस्था की मान्यता है।

v) एक समान सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था की मान्यता है।

इन मान्यताओं के साथ वेबर इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि जहाँ भौतिक सूची अधिक है, उत्पादन कार्य खनिज भण्डारों के समीप ही किए जाने की प्रवृत्ति रहती है।

28.3.3 आलोचनात्मक मूल्यांकन

अवस्थिति सिद्धान्त का सर्वप्रथम प्रतिपादन करने का श्रेय अल्फ्रेड वेबर को है। उन्होंने एक नए क्षेत्र में चिंतन और शोध को प्रेरित किया। उन्होंने औद्योगिक अवस्थिति के संगत सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। किंतु सार्जेण्ट फ्लोरेन्स, एस.आर. डेनिसन, एण्ड्रिआज प्रिडॉल और ए. रॉबिन्सन जैसे अर्थशास्त्रियों ने इस सिद्धान्त की काफी आलोचना की है।

वेबर के सिद्धान्त की आलोचना मुख्य रूप से परिवहन लागत को अधिक महत्त्व देने के कारण की गई है। इसके अतिरिक्त, वेबर ने श्रम, विशेष उपभोग केन्द्रों, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था इत्यादि के संबंध में जो मान्यताएँ बताई हैं वह बहुत ही यथार्थवादी नहीं हैं। उन्होंने कहीं भी पूँजी लागत और प्रबन्धन लागत को हिसाब में नहीं लिया है। यहाँ तक कि परिवहन लागत पर विचार करते समय भी उन्होंने यातायात के साधन, प्रदेश की भौगोलिक बनावट इत्यादि पर ध्यान नहीं दिया है। इसे और स्पष्ट करने के लिए हम आलोचना के निम्नलिखित कारणों को सूचीबद्ध कर सकते हैं :

क) **दोषपूर्ण मान्यताएँ**

इस सिद्धान्त की आलोचना अनिश्चित, अतिसरलीकृत और अयथार्थवादी मान्यताओं जैसे परिवहन लागत, श्रम अथवा उपभोग केन्द्र से संबंधित मान्यता के आधार पर की गई है।

i) परिवहन लागत के संबंध में वेबर ने परिवहन लागत निर्धारित करने वाले सिर्फ दो तत्वों पर विचार किया है : (क) परिवहन की जाने वाली सामग्री का भार, और (ख) तय की जाने वाली दूरी। इस आलोचना के दो महत्त्वपूर्ण मुद्दे निम्नलिखित हैं :

एक, परिवहन लागत में अंतर न सिर्फ भार और दूरी से प्रभावित होता है, अपितु परिवहन के प्रकार, परिवहन की जाने वाली सामग्री की प्रकृति, प्रदेश की भौगोलिक बनावट और विशेषता जैसे कारक द्वारा भी प्रभावित होता है।

दो, परिवहन लागतों का विवेचन मुद्रा के रूप में किया जाना चाहिए न कि वास्तविक जटिल इकाइयों में।

ii) इस सिद्धान्त में श्रम संबंधी दो मान्यताएँ हैं : (क) स्थिर श्रम केन्द्र, और (ख) उनमें से प्रत्येक में श्रम की असीमित पूर्ति। यहाँ पुन: पहली मान्यता अवास्तविक है। एक उद्योग की प्रगति के साथ, श्रम के नए केन्द्रों का विकास होता है। इसी प्रकार, यह विश्वास करना बिल्कुल गलत

होगा कि प्रत्येक श्रम केन्द्र में श्रम की असीमित आपूर्ति होगी। इसके अलावा, एक उद्योग या क्षेत्र के विकास के साथ मज़दूरी दर बदलती रहती है और समानान्तर रूप से श्रम की माँग एवं पूर्ति में भी परिवर्तन होता है।

iii) उपभोग के निश्चित केन्द्र की मान्यता भी प्रतिस्पर्धी बाज़ार संरचना अनुरूप नहीं है। बाज़ार अधिक विस्तृत हो सकता है तथा यह खरीदारों पर उतना ही निर्भर कर सकता है जितना कि प्रतिस्पर्धी विक्रेताओं पर। ऑस्टिन राबिन्सन का कहना है कि वास्तव में विस्तृत बाज़ार जिसमें प्रतिस्पर्धी उत्पादक होते हैं विद्यमान हैं। सामान्यत: उपभोक्ता पूरे देश में फैले होते हैं और उपभोग केन्द्र औद्योगिक जनसंख्या में परिवर्तन के साथ बदल सकता है। इस प्रकार; उपभोक्ता केन्द्र, अवस्थिति संबंधी परिवर्तन का कारण और परिणाम दोनों होता है।

ख) **अनिश्चित धारणाएँ**

इस सिद्धान्त की आलोचना अनिश्चित धारणाओं के आधार पर भी की गई है। यह तर्क दिया गया है कि अनिश्चित धारणाओं द्वारा औद्योगिक अवस्थिति की व्याख्या नहीं की जा सकती है क्योंकि यह इतर आर्थिक चिन्तनों का भी परिणाम होता है जो ठोस वास्तविकता की व्याख्या करने के लिए 'शुद्ध सिद्धान्त' के दायरे से बाहर होते हैं। इसलिए, इस उपागम को आगमनात्मक और विश्लेषणात्मक होना चाहिए। वेबर का सिद्धान्त ऐतिहासिक और सामाजिक कारकों के परिणामस्वरूप अवस्थिति की व्याख्या नहीं कर पाता है।

ग) **निगमनात्मक सिद्धान्त की अपेक्षा चयनात्मक सिद्धान्त**

जैसा कि हमने ऊपर देखा, वेबर ने औद्योगिक अवस्थिति को प्रभावित करने वाले प्राथमिक और गौण कारणों की पहचान की है। प्राथमिक और गौण कारकों के चयन का उल्लेख करते हुए एन्ड्रियाज प्रिडॉल यह तर्क देते हैं कि वेबर का सिद्धान्त निगमनात्मक सिद्धान्त की अपेक्षा चयनात्मक अधिक है। यह भी बताया गया है कि वेबर द्वारा सामान्य और विशिष्ट घटकों के बीच किया गया भेद मनमाना और कृत्रिम है। इसका कोई तार्किक महत्त्व नहीं है। यह भी प्रश्न किया गया है कि सिर्फ 'परिवहन लागतों' और 'श्रम लागतों' को ही सामान्य कारक क्यों माना जाए। सामान्य कारकों के रूप में अन्य लागतों के साथ 'पूँजीगत लागतों' और 'प्रबन्धन लागतों' को सम्मिलित करना अधिक तर्कसंगत है। यह भी सुझाव दिया गया है कि यदि इन सभी कारकों को समान महत्त्व दिया जाए तो औद्योगिक अवस्थिति का एकीकृत सिद्धान्त प्रतिपादित करने में सहायता मिलेगी। इससे अवस्थिति के विशेष सिद्धान्त का सामान्य आर्थिक सिद्धान्त के साथ सामंजस्य कर पाना सुगम होगा।

घ) **विश्लेषण की त्रुटिपूर्ण पद्धति**

वेबर की विश्लेषण पद्धति का भी खूब विश्लेषण किया गया है। ऑस्टिन रॉबिन्सन का मानना है कि कच्चे माल का सर्वव्यापी कच्चे माल और स्थिर सामग्रियों (fixed materials) में वर्गीकरण कृत्रिम है। यहाँ यह बताया जा सकता है कि वास्तविक व्यावसायिक सामग्री बड़ी संख्या में वैकल्पिक स्रोतों से प्राप्त किए जा सकते हैं और वेबर द्वारा सुझाई गई रीति के अनुरूप वर्गीकरण को स्वीकार करना यथार्थवादी नहीं होगा।

ड.) **यह उपागम तकनीकी विचारों से अत्यधिक बोझिल हो गया है**

डेनिसन का विचार है कि वेबर का सिद्धान्त तकनीकी विचारों के कारण अत्यधिक बोझिल हो गया है। उनका तर्क है कि वेबर के विश्लेषण में लागतों और मूल्यों की पूरी तरह से अवहेलना की गई है।

इसे तकनीकी गुणांक के रूप में तैयार किया गया है। वस्तुतः, एक अर्थशास्त्री की जाँच-पड़ताल मुख्य रूप से लागत और मूल्य पर आधारित होनी चाहिए।

संक्षेप में, वेबर के सिद्धान्त की खूब आलोचना की गई है। तथापि, औद्योगिक अवस्थिति के सिद्धान्त में यह एक अग्रणी प्रयास था। कुछ अर्थशास्त्री वेबर के प्रति अधिक उदार हैं। वे वेबर के सिद्धान्त के बुनियादी आधारों पर प्रश्न नहीं करते हैं। वे इसे सिर्फ व्यावहारिक दृष्टि से अधिक उपयोगी बनाने के लिए शुद्ध सिद्धान्त में कुछ उपान्तरण करने का सुझाव देते हैं।

इन कुछ उपान्तरों में से कुछ अधिक महत्त्वपूर्ण निम्नलिखित हैं :

एक, परिवहन लागतों से संबंधित मान्यताओं में संशोधन किया जाए **और** परिवहन लागतों को मात्र भार और दूरी के संदर्भ में विवेचित करने की बजाए परिवहन के विभिन्न साधनों की वास्तविक दर अनुसूची को सम्मिलित किया जाए।

दो, निश्चित श्रम केन्द्रों से संबंधित मान्यताओं में उपांतरण आवश्यक है। अवस्थिति सिद्धान्त में श्रमिकों की उत्प्रवास की प्रवृत्तियों, श्रमिकों की परिवर्तनशील पूर्ति और बदलती हुई मजदूरी दरों को अन्तर्विष्ट किए जाने की आवश्यकता है।

तीन, उपभोक्ता केन्द्रों पर सीमित क्षेत्रों की अपेक्षा विस्तृत क्षेत्रों के रूप में विचार करना महत्त्वपूर्ण है। संभावित बाज़ार के विस्तार को समाप्त करने से पूर्व प्रतिस्पर्धी विक्रेताओं को भी हिसाब में लेना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, यदि राज्य द्वारा पूरे देश में एक समान दर पर उत्पाद की पूर्ति करने के उद्देश्य से परिवहन व्ययों को राजसहायता (सब्सिडी) प्रदान की जाती है तो यह भी संभव है कि एक उद्योग की अवस्थिति पर उपभोग केन्द्रों का कोई प्रभाव नहीं पड़े।

चार, यह आलोचना कि यह सिद्धान्त सिर्फ तकनीकी गुणांकों पर विचार करता है, की त्रुटि को जहाँ कहीं भी संभव हो, सिर्फ लागत और मूल्य के रूप में गणना को शामिल करके दूर किया जा सकता है।

बोध प्रश्न 1

1) वेबर के औद्योगिक अवस्थिति के सिद्धान्त में कौन-कौन से प्रादेशिक कारक हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) संचयी और विसंचयी कारकों में भेद कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) वेबर के सिद्धान्त की मान्यताएँ क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4) वेबर के सिद्धान्त की कुछ महत्त्वपूर्ण आलोचनाओं का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5) वेबर के सिद्धान्त में उपान्तरों का सुझाव दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

28.4 सार्जेण्ट फ्लोरेन्स का आगमनात्मक विश्लेषण

अल्फ्रेड वेबर की अवस्थिति के सिद्धान्त की आलोचक सार्जेण्ट फ्लोरेन्स ने औद्योगिक अवस्थिति का एक बिल्कुल ही अलग उपागम प्रतिपादित किया है। उनकी दृष्टि में, उद्योगों का भौगोलिक क्षेत्र से उतना महत्त्वपूर्ण संबंध नहीं है जितना कि कुल मिलाकर बसी हुई जनसंख्या के वितरण से है।

फ्लोरेन्स ने उत्पादन गणना से अलग औद्योगिकरण के स्थानीयकरण की मात्रा का सांख्यिकीय माप निकाला है। उन्होंने औद्योगिक अवस्थिति के सिद्धान्त की शब्दावली में दो नई अवधारणाओं का प्रतिपादन किया है।

क) अवस्थिति कारक

ख) स्थानीयकरण का गुणांक

28.4.1 अवस्थिति कारक

अवस्थिति कारक एक विशेष स्थान में एक उद्योग के केन्द्रीकरण की मात्रा का सूचकांक है।

यह सूचकांक किसी निश्चित क्षेत्र में पाई जाने वाली विशेष उद्योग में सभी श्रमिकों के प्रतिशत को लेकर और उसे देश में कुल औद्योगिक श्रमिकों के उस विशेष क्षेत्र में अनुपात द्वारा विभाजन करके निकाला जाता है।

यह क्षेत्र देश के राजनीतिक विभाजनों के अनुरूप है।

इस तरह के सूचकांक के पीछे यह विचार है कि अवस्थिति की व्याख्या उद्योग के भौगोलिक वितरण और देश की जनसंख्या के बीच विषमता की मात्रा के रूप में की जा सकती है।

यह सूचकांक निम्नवत् निकाला गया है:

i) यदि एक उद्योग का पूरे देश में समरूप वितरण है प्रत्येक क्षेत्र के लिए अवस्थिति कारक इकाई (=1) होगा क्योंकि उस क्षेत्र में कुल औद्योगिक श्रमिकों का अनुपात एक विशेष उद्योग में श्रमिकों के अनुपात के बराबर होगा।

ii) यदि एक उद्योग का पूरे देश में विषम वितरण है, तो अवस्थिति कारक या तो इकाई से अधिक (>1) अथवा इकाई से कम (<1) होगा।

जब अवस्थिति कारक इकाई से अधिक है तब यह माना जाता है कि उस क्षेत्र में उद्योग का हिस्सा क्षेत्र के लिए यथोचित उद्योग के हिस्सा से कहीं अधिक है।

यदि अवस्थिति कारक इकाई से कम है तो यह मानना होगा कि उस क्षेत्र में उद्योग का हिस्सा क्षेत्र के लिए यथोचित उद्योग के हिस्से से कम है।

28.4.2 अवस्थिति का गुणांक

अवस्थिति गुणांक एक उद्योग की केन्द्रीकरण की प्रवृत्ति का सूचक है। एक उद्योग के लिए अवस्थिति का गुणांक निम्नलिखित सूत्र द्वारा निकाला जा सकता है। गुणांक, विशेष उद्योग में कर्मकारों का क्षेत्रीय प्रतिशत पूरे देश में कर्मकारों के तद्नुरूपी क्षेत्रीय प्रतिशत से जितना अधिक है उसका योग (100 से विभाजित) है।

i) सभी उद्योगों के साथ विशेष उद्योग का क्षेत्र-दर-क्षेत्र पूर्ण संपाति शून्य गुणांक देता है।

ii) अतिशय विभेदीकरण (अर्थात् एक विशेष क्षेत्र में श्रमिक एक क्षेत्र में ही केन्द्रकृत हैं) से 1 के निकट का अंक निकलता है।

इस तरह का सूचकांक निकालने का उद्देश्य उद्योगों का उनके विकेन्द्रीकरण अथवा केन्द्रीकरण की विशेषताओं के अनुरूप वर्गीकरण करना है। स्थानीयकरण के गुणांक के आधार पर, सभी उद्योगों को तीन परिमाणों में बाँटा जा सकता है।

i) अधिक गुणांक वाले उद्योग

ii) मध्यम गुणांक वाले उद्योग

iii) निम्न गुणांक वाले उद्योग

स्थानीयकरण के उच्च गुणांक वाले उद्योग जैसे खनन उद्योग विशेष क्षेत्रों में केन्द्रीकृत हैं। इसके विपरीत स्थानीयकरण के निम्न गुणांक वाले उद्योग जैसे चर्म उद्योग, ईंट बनाना, भवन निर्माण इत्यादि अलग-अलग क्षेत्रों में विकसित हो सकते हैं और इस प्रकार विकेन्द्रीकृत हैं। इन दोनों के बीच वस्त्र, जूट, कागज़, सीमेण्ट इत्यादि जैसे उद्योग हैं जिनके पास अवस्थिति के चयन का पर्याप्त विकल्प होता है।

28.4.3 आलोचनात्मक मूल्यांकन

सार्जेण्ट फ्लोरेन्स द्वारा तैयार इन दो सांख्यिकीय सूचकांकों का किसी भी देश में अवस्थिति संबंधी गति सिद्धान्त के अध्ययन के लिए अत्यधिक महत्त्व है। इस तरह की गत्यात्मकता के पीछे कारणों को निश्चित करने से पहले सैद्धान्तिक नियमों को लागू करने से पूर्व इस तरह के सूचकांकों को बनाना है।

तथापि, फ्लोरेन्स के आगमनात्मक उपागम की भी आलोचना की गई है। कुछ महत्त्वपूर्ण आलोचनाएँ इस प्रकार हैं :

एक, सांख्यिकीय सूचकांक सिर्फ उद्योगों के वितरण की विद्यमान दशा को प्रकट करता है। विशेष प्रकार के केन्द्रीकरण के कारणों की व्याख्या में वे सहायक नहीं हैं। इससे विभिन्न क्षेत्रों में उद्योगों की ठीक-ठीक अवस्थिति के प्रश्न पर कोई उपयोगी प्रकाश नहीं पड़ता है। संक्षेप में, सांख्यिकीय आँकड़े भविष्य में उद्योगों की अवस्थिति के लिए नीति तैयार करने में किसी प्रकार का मार्ग दर्शन नहीं करते हैं।

दो, स्थानीयकरण का गुणांक मुख्यत: देश में उद्योगों के वितरण के प्रकार पर आधारित है। गुणांक स्थानीय दशाओं के आधार पर एक देश से दूसरे देश में अलग-अलग होगा। दो देशों के गुणांक मूल्यों की तुलना करना अयथार्थवादी होगा।

तीन, अवस्थिति कारक प्रत्येक क्षेत्र में नियोजित औद्योगिक श्रमिकों की संख्या पर आधारित है। इसलिए यह किसी उद्योग के केन्द्रीकरण की मात्रा को सदैव ही ठीक-ठीक दर्शा सकता है। इससे भी बेहतर आधार प्रत्येक क्षेत्र में निर्गत की तुलना हो सकती है क्योंकि विभिन्न औद्योगिक केन्द्रों में उनके द्वारा नियोजित श्रम की भिन्न-भिन्न विशेषताओं के कारण उत्पादन की दक्षता में भिन्नता हो सकती है।

तथापि, कतिपय सीमाओं के रहने के बावजूद भी यह दो सांख्यिकीय सूचकांक देश में औद्योगिक विकास की प्रवृत्तियों के विश्लेषण में बहुमूल्य मार्गदर्शन करते हैं।

28.5 अवस्थिति के अन्य सिद्धान्त

जैसा कि पहले बताया जा चुका है अल्फ्रेड वेबर के अग्रणी कार्य ने औद्योगिक अवस्थिति के सिद्धान्त के क्षेत्र में और अधिक प्रयासों को प्रेरित किया। इस विषय में सार्जेण्ट फ्लोरेन्स के व्यापक शोध के साथ-साथ अन्य अर्थशास्त्रियों द्वारा भी उतना ही महत्त्वपूर्ण योगदान किया गया है।

अब हम इन योगदानों की संक्षेप में समीक्षा करेंगे :

i) आधुनिक सिद्धान्तकारों में, ई.एम. हूवर का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने परिवहन के आधुनिक साधनों की विशेषताओं पर विचार करते हुए वेबर के सिद्धान्त में कतिपय सुधारों का सुझाव दिया है।

हूवर के अनुसार, आज ट्रांसपोर्ट एजेन्सियों को पण्य वस्तुओं की लदाई-उतराई, लदाई के बिल, और यात्रा के दोनों अंतिम पड़ावों पर बीजक (INVOICE) इत्यादि तैयार करने के लिए उच्च एकश: लागत (terminal cost) व्यय करना पड़ता है और ये व्यय यात्रा में तय की गई दूरी से अलग हैं। इसके अतिरिक्त, अब परिवहन लागत वक्र और अधिक वक्र हो जाती है क्योंकि उपकरणों और रख-रखाव के लिए निर्धारित प्रभार उच्च हैं और अपेक्षाकृत लम्बी ढुलाई में वाहनों और उपकरणों के उपयोग से अधिक दक्षता आती है। इसलिए उद्योगों, के रेलमार्गों, एवं जलमार्गों के बड़े-बड़े केन्द्रों और अन्य परिवहन केन्द्रों में केन्द्रीकृत होने की प्रवृत्ति रहती है।

ii) लियोन मोसेस ने अवस्थिति सिद्धान्त में एक और आयाम जोड़ दिया है। उनकी दृष्टि में अनुकूलतम निर्गत, आदानों के अनुकूलतम सम्मिश्र और अनुकूलतम अवस्थिति की समस्या एक दूसरे से जुड़े हुए हैं तथा इन सबका समाधान एक साथ किया जाना चाहिए। उनके विचार में बड़े पैमाने की मित्व्ययिता और उत्पादन प्रक्रिया में अन्य चरों द्वारा न्यूनतम इकाई लागत कितना प्रभावित होगा उस पर विचार करने से पहले न्यूनतम लागत स्थान का निर्धारण नहीं किया जा सकता है।

iii) हाल के कुछ सिद्धान्तों में अवस्थिति को प्रभावित करने वाले एक महत्त्वपूर्ण कारक के रूप में बिक्री प्रदेशों के आकार पर विचार किया गया है। ग्रीनहट और फ्रेटर द्वारा प्रतिपादित क्रमश: माँग का विशेष वितरण और बाज़ार क्षेत्र उपागम वेबर के सिद्धान्त में माँग की अवास्तविक विवेचन की ओर इंगित करता है। नए उपागम में खरीदार के चयन या पसंद को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। एक अर्थव्यवस्था में, यदि खरीदार के पास दो प्रतिस्पर्धी विक्रेताओं का विकल्प मौजूद है तो वह अपने समीप के विक्रेता से खरीदेगा। इसलिए, उत्पादक की सेवाएँ यथा संभव अधिक से अधिक भावी उपभोक्ताओं के समीप अवस्थिति पर निर्भर करती है। इन सिद्धान्तकारों के अनुसार, फर्म की अवस्थिति के चयन की सफलता का पैमाना बिक्री प्रदेश का वह आकार होगा जिसमें उसका एकाधिकार है क्योंकि उत्पादक का बिक्री के परिमाण से सीधा संबंध है। इसलिए प्रत्येक उत्पादक, अपने प्रतिस्पर्धियों की अपेक्षा कुछ अधिक लागत लाभ अर्जित करने का प्रयास करता है ताकि वह दूसरों के बिक्री क्षेत्र में अपने बिक्री क्षेत्र का विस्तार कर सके। बाज़ार क्षेत्र उपागम उन उद्योगों का अध्ययन करने में उपयोगी है जहाँ उत्पाद मानक हैं और परिवहन लागत पर्याप्त रूप से अधिक होना चाहिए जो कि वितरण मूल्यों को महत्त्वपूर्ण रूप से परिलक्षित करे। (पहले होटेलिंग के कारण)

iv) कुछ सिद्धान्तकारों ने वेबर की न्यूनतम लागत उपागम और ग्रीनहट तथा फ्रेटर के बाज़ार क्षेत्र उपागम की इस आधार पर आलोचना की है कि अवस्थिति के कारणों पर विचार करते समय मानवीय कारकों की उपेक्षा की गई है। उनका विचार है कि उद्यमी के फैसले कभी-कभी जानबूझ कर अथवा कभी-कभी यूँ भी किसी एक अथवा दूसरी सामाजिक, सांस्कृतिक अथवा जातीय समूहों के प्रति व्यक्तिगत मोह से प्रभावित होता है। एक उद्योग की अवस्थिति उस स्थान पर नहीं भी हो सकती है जो उसके लिए सबसे उपयुक्त हो। एक औसत फर्म आर्थिक दृष्टि से सर्वोत्तम अवस्थिति पर नहीं होने के बावजूद भी चल सकती है।

बोध प्रश्न 2

1) फ्लोरेन्स के सिद्धान्त में अवस्थिति के कारक क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) स्थानीयकरण के गुणांक की माप कैसे की जाती है? इसके क्या उपयोग हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) औद्योगिक अवस्थिति के सिद्धान्त के संबंध में ई.एम.हूवर के विचारों को संक्षेप में प्रस्तुत करें।

.....

.....

.....

.....

.....

28.6 अवस्थिति को प्रभावित करने वाले कारक

हमने ऊपर उद्योग की अवस्थिति की व्याख्या करने वाले कुछ महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों की समीक्षा की है। अर्थशास्त्रियों में किसी एक सिद्धान्त पर सर्वसम्मति नहीं भी हो सकती है। किंतु इसका यह अभिप्राय नहीं कि हम किसी सिद्धान्त का महत्त्व कम करके आँकें। इन विभिन्न सिद्धान्तों द्वारा सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य यह किया गया है कि वे उद्योगों की अवस्थिति को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों की पहचान करने में हमारी सहायता करते हैं।

वास्तविक व्यवहार में, उद्योगों की अवस्थिति ऐतिहासिक, आर्थिक, प्राकृतिक और यहाँ तक कि मनोवैज्ञानिक कारकों द्वारा भी निर्धारित होती है।

28.6.1 ऐतिहासिक कारक

विगत में कई बार बिना किसी विशेष औचित्य के किसी विशेष स्थान अथवा क्षेत्र में अनेक उद्योगों की स्थापना हो गई। यह सूती वस्त्र उद्योग के बारे में भी सत्य है जो यू.के. में लंकाशायर में केन्द्रीकृत हो गया था। लंकाशायर में इसके केन्द्रीकरण का कोई विशेष कारण नहीं था, सिवाए इसके कि वहाँ ऊनी वस्त्र उद्योग पहले से ही विद्यमान था और विदेशियों का काफी आवागमन होता था। इससे पता चलता है कि उद्योगों का स्थानीयकरण सिर्फ आकस्मिक अथवा ऐतिहासिक कारकों के परिणामस्वरूप भी हो सकता है। ए. बीचम ठीक ही लिखते हैं "जब एक विशेष क्षेत्र को किसी उद्योग के केन्द्रीकरण के लिए जाना जाता है तो उस स्थान से सम्बद्ध प्राकृतिक अनुकूलताओं का पता लगाना सदैव ही आसान हो जाता है।"

28.6.2 कच्चे माल की उपलब्धता

अवस्थिति के चयन को प्रभावित करने वाला एक महत्त्वपूर्ण कारक कच्चे मालों की निकटता है। कच्चे माल की निकटता से दो बातें सुनिश्चित होती हैं :

क) किसी उत्पाद के कुल उत्पादन लागत में कचे माल की लागत का अनुपात

ख) कच्चे माल का स्वरूप

कतिपय उद्योग हैं जिनमें उत्पाद की उत्पादन लागत का प्रमुख घटक कच्चे माल की लागत होती है, उदाहरण के लिए चीनी, सूती वस्त्र, जूट वस्त्र, वृक्षारोपण उद्योग इत्यादि। दूसरी ओर, कुछ अन्य उद्योगों में यह अधिक नहीं होता है। उत्पादन की कुल लागत में कच्चे माल की लागत का अनुपात जितना अधिक होगा इस कारक का उतना ही अधिक भारित होगा। विपरीत स्थिति रहने पर यह

कच्चे माल का स्वरूप भी इस कारक का सापेक्षिक महत्त्व निर्धारित करता है। कतिपय कच्चा माल या तो अत्यन्त भारी भरकम होता है अथवा जल्द ही नष्ट होने वाला होता है या भारी होता है। इन कच्चे मालों का परिवहन लम्बी दूरी तक नही किया जा सकता है। दूसरी ओर पी वी सी का परिवहन आसानी से काफी दूरी तक किया जा सकता है। पहली स्थिति में, कच्चे माल की निकटता महत्त्वपूर्ण कारक होगा, जबकि दूसरी स्थिति में, इसकी भूमिका अधिक नही होगी।

28.6.3 बाज़ार की अभिगम्यता

उपभोग केन्द्र भी एक उद्योग की अवस्थिति में समान रूप से महत्त्वपूर्ण निर्धारक है। यहाँ पुन:, इस कारक का सापेक्षिक महत्त्व उत्पाद की प्रकृति पर निर्भर करता है। भारी भरकम और जल्द ही नष्ट होने वाले उत्पादों का बाज़ार छोटे भौगोलिक क्षेत्र तक सीमित होता है। उन मामलों में, उद्योगों के उपभोग केन्द्रों के आसपास समूहित होने की प्रवृत्ति होती है।

दूसरी ओर यदि तैयार माल का परिवहन आसानी से लम्बी दूरी तक करना संभव हो तो कोई कारण नहीं कि उद्योग किसी विशेष स्थान पर ही केन्द्रीकृत हो।

औद्योगिक कार्यकलापों के विकेन्द्रीकरण में नए बाज़ारों का विकास एक महत्त्वपूर्ण घटक है।

28.6.4 परिवहन सम्पर्क

औद्योगिक अवस्थिति इस कारक से भी प्रभावित होता है कि कोई विशेष स्थान परिवहन और संचार के साधनों द्वारा दूरवर्ती स्थानों से कितनी अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। संचार के नए साधनों के विकास से कुछ सेवा उद्योगों का विकेन्द्रीकरण हुआ है। परिवहन अभिगम्यता कच्चे मालों की उपलब्धता और तैयार मालों को सुदूर बाज़ारों तक पहुंचाने, दोनों को प्रभावित करता है।

परिवहन के आधुनिक साधनों की बढ़ी हुई उपलब्धता और कार्य कुशलता ने उद्योगों की अवस्थिति के चयन के मामले में विगत की अपेक्षा अधिक स्वतंत्रता प्रदान की है।

28.6.5 विद्युत संसाधन

आधुनिक उद्योग के प्रचालन के लिए विद्युत सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आदान है। किसी भी उद्योग का उपयुक्त और उचित मात्रा में निर्बाध विद्युत आपूर्ति के बिना काम नहीं चल सकता। इसलिए, वे क्षेत्र जहाँ विद्युत की निर्बाध आपूर्ति होती है, उन क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक उद्योगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं जहाँ विद्युत संसाधन का अभाव है।

28.6.6 श्रम संबंध

श्रम के मामले में दो बातें हैं।

एक, कम मजदूरी पर श्रमिकों की उपलब्धता है। पहले मुम्बई क्षेत्र और बाद में अन्तवर्ती कस्बों जैसे अहमदाबाद, शोलापुर, नागपुर और कानपुर में वस्त्र उद्योग के बड़े पैमाने पर केन्द्रीकरण के लिए यही कारक उत्तरदायी था। इसी प्रकार, जमशेदपुर में लौह और इस्पात उद्योग की स्थापना काफी हद तक सतत् श्रम आपूर्ति के कारण संभव हुआ था।

तथापि, इस एक कारक का प्रभाव अब काफी कुछ कम हो रहा है। अब परिवहन और संचार के साधनों के विकास के साथ किसी भी दूरस्थ स्थान से श्रम की बढ़ी हुई पूर्ति का प्रबन्ध करना अधिक संभव होता जा रहा है। उदाहरण के लिए, कॉल सेंटरों का विकास।

दो, इस निर्णय में श्रम-संबंध भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन क्षेत्रों में जहाँ ट्रेड-यूनियनों का प्रभाव अधिक है, को सामान्यता कम प्राथमिकता दी जाती है। ट्रेड यूनियनों की उपस्थिति से भी अधिक महत्त्वपूर्ण यूनियनों की गतिविधियों के प्रति सरकार का रवैया है। सरकार ने जिन क्षेत्रों में अधिक संघर्षवादी यूनियनों को सख्ती से नियंत्रित करने का प्रयास किया है उन क्षेत्रों में उद्योगों के फलने-फूलने की प्रवृत्ति होती है। इसके विपरीत, जहाँ सरकार ट्रेड यूनियनों की अवैध गतिविधियों की मूक-दर्शक बनी रहती हैं वहाँ से उद्योगों के हट जाने की घटना सर्वविदित हैं।

28.6.7 आधारभूत संरचना सेवाएँ

विकसित स्थलों की कम मूल्य पर आसानी से उपलब्धता और साथ ही जन उपयोगी सेवाओं की सुलभता उद्योगों को अधिक आकृष्ट करते हैं, विशेष क्षेत्रों द्वारा प्रदत्त सामाजिक सुविधाएँ जैसे आवास और चिकित्सा सुविधाएँ उद्योगों के लिए विशेष आकर्षण होते हैं। पुन:, जब एक उद्योग सापेक्षिक रूप से छोटे क्षेत्र में स्वयं को केन्द्रीकृत करता है तो बहुधा 'केन्द्रीकरण की मित्व्ययिता' के परिणामस्वरूप लाभ मिलता है। इनमें बाह्य मित्व्ययिताएँ भी सम्मिलित हैं जो अलग-अलग फर्मों को एक-दूसरे से अधिक जोड़ती हैं।

28.6.8 वित्तीय सेवाएँ

बीते दिनों में, उद्योगों की अवस्थिति के निर्धारण में भरोसेमंद और सस्ती वित्तीय सुविधाओं एवं सेवाओं की उपलब्धता ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

किंतु अंतरण और संचार के इलैक्ट्रॉनिक साधनों के विकास के कारण इस कारक का महत्त्व घट गया है। किंतु वह विशेष क्षेत्र या प्रदेश इसका अपवाद है जहाँ उद्योगों को आकर्षित करने के लिए सरकार उदार शर्तों पर साख सुविधएँ प्रदान करती हैं।

28.6.9 प्राकृतिक और जलवायु संबंधी दशाएँ

क्षेत्र का भौगोलिक स्वरूप, अपवाह सुविधाएँ और अपशेषों का निस्तारण उद्योगों की अवस्थिति को प्रभावित करता है।

इसी प्रकार, उद्योग विशेषकर वे उद्योग जो कृषिगत कच्चे मालों पर निर्भर करते हैं की अवस्थिति के निर्धारण में जलवायु महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

28.6.10 व्यक्तिगत कारक

उद्यमी सदैव ही अपने औद्योगिक उपक्रमों की अवस्थिति के बारे में निर्णय लेने में विशुद्ध आर्थिक कारणों से ही प्रभावित होगा, ऐसी बात नहीं है। इसमें व्यक्तियों की व्यक्तिगत पसंद और पूर्वाग्रह भी उतने ही महत्त्वपूर्ण होते हैं जो अवस्थिती को निर्धारित करते हैं।

28.6.11 रणनीतिक कारण

हाल के वर्षों में औद्योगिक अवस्थितियों में रणनीतिक कारणों को विशेष महत्त्व दिया गया है। इस कारक के कारण कभी-कभी उद्योग विकेन्द्रीकृत और फैले हुए होते हैं।

संक्षेप में, उद्योग की अवस्थिति के लिए स्थान के चयन को कई कारक निर्धारित करते हैं। बहुत बड़ी संख्या में कारकों का जटिल सम्मिश्र है जो इस संबंध में निर्णय की प्रक्रिया को प्रभावित करता है।

बोध प्रश्न 3

1) ऐतिहासिक कारक उद्योग की अवस्थिति को कैसे निर्धारित करते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) उद्योग की अवस्थिति के निर्धारक के रूप में कच्चे मालों की निकटता का क्या महत्त्व है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) उद्योग की अवस्थिति को श्रम किस तरह से प्रभावित करता है?

.....

.....

.....

.....

.....

28.7 औद्योगिक अवस्थिति की गत्यात्मकता

एक विशेष अवधि में विशेष प्रदेश में औद्योगिक अवस्थिति उस विशेष समय में हो चुके आर्थिक विकास के विशेष चरण से संबंधित है। विभिन्न कारकों में परिवर्तन औद्योगिक गतिविधि की अवस्थिति में परिवर्तन ला सकते हैं।

ई.एम. हूवर ने अवस्थिति संबंधी परिवर्तन के कारणों को चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया है (क) मौसम संबंधी, (ख) चक्रीय, (ग) धर्मनिरपेक्ष, और (घ) संरचनात्मक।

28.7.1 मौसम संबंधी परिवर्तन

उत्पादक मौसम की परिवर्तनशील दशाओं से समायोजन के लिए अपनी गतिशीलता की सीमाओं के अंदर अवस्थितियों में परिवर्तन करते हैं।

28.7.2 चक्रीय परिवर्तन

चक्रीय परिवर्तनों का पूर्वानुमान लगाना मुश्किल है तथा ये मौसमी परिवर्तनों की अपेक्षा अधिक समय तक चलते हैं। यह व्यापारिक चक्रों के लहर का परिणाम होता है। चक्रीय उतार-चढ़ाव, निवेश, आय के वितरण, घटक उपयोग और सापेक्षिक मूल्यों को प्रभावित करते हैं।

28.7.3 धर्मनिरपेक्ष परिवर्तन

धर्मनिरपेक्ष परिवर्तन से धीरे-धीरे परिवर्तन होते हैं जो दीर्घकाल तक जारी रहता है और व्यापार चक्रों अथवा मौसमी परिवर्तनों की भाँति स्वयं उल्टी दिशा में नहीं जाता है और नहीं दोहराता है।

28.7.4 संरचनात्मक परिवर्तन

नए संसाधनों और तकनीकी के विकास से संरचनात्मक परिवर्तन होते हैं। इस प्रकार के परिवर्तन हस्तांतरण लागतों, श्रमिक आवश्यकताओं, सामग्री आवश्यकताओं और ऊर्जा लागतों में परिवर्तन के माध्यम से अवस्थिति को प्रभावित करते हैं।

28.8 सारांश

मानव की ही भाँति उद्योग की भी कुछ प्रदेशों और क्षेत्रों में केन्द्रीकृत होने की प्रवृत्ति होती है। संयंत्र को किसी स्थान विशेष पर अवस्थित करने का उद्यमी का निर्णय सबसे महत्त्वपूर्ण निर्णय होता है। वह विभिन्न विचारों से प्रभावित होता है। औद्योगिक अवस्थिति के निगमनात्मक सिद्धान्त के प्रतिपादन में वेबर का अग्रणी स्थान है। सार्जेण्ट फ्लोरेन्स ने इसी प्रघटना का आगमनात्मक विश्लेषण किया है। आधुनिक अर्थशास्त्रियों ने भी इस वाद-विवाद में अपना योगदान किया है। इस वाद-विवाद से वे कारक स्पष्ट रूप से प्रकट हुए हैं जो उद्योग की अवस्थिति संबंधी निर्णय को प्रभावित करते हैं। तथापि, अवस्थिति की अवधारणा एक गतिशील अवधारणा है। यह विभिन्न कारकों में परिवर्तन के साथ बदलती रहता है।

28.9 शब्दावली

भौतिक सूची : तैयार उत्पाद की तुलना में स्थानीय कच्चे माल के भार का अनुपात है।

स्थानीय परिमाण : उत्पादन की पूरी प्रक्रिया के दौरान परिवहन किया जाने वाला भार है।

श्रम लागत सूचकांक : उत्पाद के मूल्य में श्रम लागत का अनुपात है।

संचयी कारक : एक उद्योग के केन्द्रीकरण के कारण उत्पादन में लाभ अथवा उत्पादन का सस्ता होना।

विसंचयी कारक : उद्योगों के विकेन्द्रीकरण के कारण उत्पादन लागत में कमी।

28.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें एवं संदर्भ

ए. के. मुखर्जी (1985). *ए थ्योरी ऑफ लोकेशन ऑफ इण्डस्ट्रीज़*, में अल्फ्रेड वेबर, "इकनॉमिक्स ऑफ इण्डियन इण्डस्ट्री", एस.चंद. नई दिल्ली।

सार्जेण्ट फ्लोरेन्स (1948). *इन्वेस्टमेंट, लोकेशन एण्ड साइज़ ऑफ प्लांट*, कैम्ब्रिज़ यूनिवर्सिटी प्रेस

अनिंद्य सेन (संपा.) (1998). *इण्डस्ट्रियल ऑर्गेनाइजेशन*, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, कलकत्ता

ई.ए.जी. रॉबिन्सन, (1932). *दि स्ट्रक्चर ऑफ कम्पीटिटिव इंडस्ट्री*, शिकागो यूनिवर्सिटी प्रेस, शिकागो

28.11 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1) उपभाग 28.3.1 देखिए।

2) उपभाग 28.3.1 देखिए।

3) उपभाग 28.2.2 देखिए।

4) उपभाग 28.3.3 देखिए।

बोध प्रश्न 2

1) उपभाग 28.4.1 देखिए।

2) उपभाग 28.4.2 देखिए।

3) उपभाग 28.4.5 देखिए।

बोध प्रश्न 3

1) उपभाग 28.6.1 देखिए।

2) उपभाग 28.6.2 देखिए।

3) उपभाग 28.6.6 देखिए।